मूरख करि न माणु, काया माया कुल जो,
अचे हणंदुइ ओचितो, कालु कहारी ब्राणु,
संगी थींदुइ कोन को, बुढ्ढो ब्रारु जुआणु,
सभुको समय साणु, हलियो वञे हेकिलो.

अज्ञानी मनुष्य को संबोधित करते हुए कहते हैं, ''हे मूर्ख ! तुम अपनी काया (शरीर, देह), माया (धन-दौलत) और कुल (वंश) का अभिमान मत करो । अरे, काल (मृत्यु) अचानक ही आकार तुम्हें ऐसा बाण मारेगा कि तुम उसी क्षण मर जाओगे। तब इन में से कोई भी तुम्हारे साथ नहीं चलेगा। तुम अकेले ही खाली हाथ ऊपर चले जाओगे। समय आने पर सबको अकेले ही जाना पड़ता है, फिर चाहे वह बच्चा हो जवान हो या वृद्ध जन।''

मनुष्य के रूप में जन्म मिलना बड़े पुण्य और भाग्य की बात मानी गयी है। यह जन्म सफल और सार्थक करना मनुष्य का कर्तव्य है। मनुष्य को एक तथ्य ध्यान में रखना है कि एक दिन सब यहीं छोड़कर जाना है। मृत्यु किसी को नहीं छोड़ती। जो जन्म लेकर आया है, उसे कभी न कभी मृत्यु को प्राप्त होना ही है। इस धरती को 'मृत्युलोक' भी इसी कारण कहा गया है। सभी प्राणियों को मृत्यु के मुँह में जाना ही पड़ता है। ज्ञानी लोग यह बात समझते हैं। इसलिए व सतगुरु की शरण में आत्मज्ञान प्राप्त कर और परमेश्वर की भक्ति या भजन कर अपना जीवन सफल करते हैं।

इसके विपरीत जो अज्ञानी या मूर्ख लोग होते हैं, वे घर-गृहस्थी में उलझ जाते हैं। माया के विभिन्न रूप उन्हें अपने मोह-जाल में फँसा लेते हैं। अपनी संपत्ति, अपने शरीर और वंश पर अभिमान करना उनकी वृत्ति बन जाती है। उनकी आँखों पर एक पर्दा पड़ जाता है। परिणामस्वरूप वे स्वयं को बड़ा, महान, सर्वश्रेष्ठ आदि मानने लगते हैं। किन्तु वे नहीं जानते कि मृत्यु उनके पीछे ही खड़ी है, जो उन्हें किसी भी क्षण दबोच सकती है। वे अहंकार के कारण यह भी नहीं सोच पाते हैं कि मरने के उपरांत कोई भी उनका साथ देने वाला नहीं है अथवा सभी जीवों की यही दशा होने वाली है। इस कटु और भयानक सत्य से वे अनभिज्ञ होते हैं।

ऐसे ही जीवों को सामी साहब सचेत करते हुए परमेश्वर के स्मरण, भजन या भक्ति आदि करने की सलाह देते हैं।

काल फिरै सिर ऊपरै, हाथों धरे कमान ।
कहै कबीर गहु ज्ञान को, छोड़ सकल अभिमान ।।

■